तुम हे कौन ?- बडी बहन !
(धारना मेरे लिए मंजूर नही)

जून- 8 रविवार

आज का दिन कैसा था ? आँसूनामा था। मेरी दिल घबरा रही है। मैं क्या करूँ ? मेरी दो प्यारे लोगों का विदाई मैं कैसे झेल पाऊँ ? बाबा अगर आप यहा होती तो अच्छी होती। आज मुझे मेरी छोटा भाई को भी अकेला छोडना पडा। लेकिन मैं मेरी मर्जी से नही किया फैसा। वे एक अक्सेटन्ट था बाबा मुझे उसे बचा न सका मुझे माफँ दिजिए बाबा...। शायद अल्लाह मुझे एक ओर बार मेरी दिल तूटकर मुझे जिंदगी मे आगे जाने के चुनौति देती होगी, लेकिन ये बहुत वेदनाजनक है बाबा। बाबा वैसे मैं ने आपसे व वादा किया था न उसी तरह मैं आगे बडते ही जाऊँगी चाहे कुछ भी हो मैं हमेशा लडने की कोशिश करूँगी और अम्मी और मुस्कान को मेरे साथ ही ले जाऊँगी। मैं अब भी थकी हूँ पर मैं हार नही मानजे मैं सच के साथ लडकर मेरी छोटी भाई को मुझसे छीने लोगों को ज़रूर सज़ा दूँगी। मुझे सारी काम करने की ताकत दे अल्लाह -आमीन। बाबा और छोटे का बहुत याद आ रही है। कुछ आगे लिखने का मन नही क्योंकि मेरी आखँ आसु से भीग गई है। मेरी वादा मैं कभी नही भूलूँगी।

एक दिन पहले
"अम्मी... अम्मी आप कहा है ?"
"बेटा तु इतनी शोर क्यों बचा रहा है ? मैं आती हूँ"
"अम्मी मैं कब से आपकी इंतज़ार कर रहे थे, आप कहा थे ?"
"अरे मुझे रसोई में कुछ ज़्यादा ही काम थे"
"ज़्यादा काम का मतलब ?"
"अरे बेटा क्या तुमने भूल गया कल तेरी आपी जन्मदिन है और साथ ही उसकी नौकरी की प्रमोशन भी हो गई। इसी केलिए मुझे कुछ ज़रूरी काम थी"
"कसम से मैं तो वह भूल ही गया। अम्मी, आप अब एक मदद करे मुझे"
"क्या मदद सलमान ?"
"अम्मी ज़रा सी बात है, मैं अब, अभी आपी केलिए कोई तोहफ़े लाने केलिए बाज़ार जा रहा है आप मुझे कुछ पैसे और दो खड़े दे। अगर आपी ने पूछोगे तो मैं खेलने केलिए कई गई कहना"
"लेकिन बेटा अभी तो देर हो रही है और रात होने केलिए कुछ ही समय है"
"अम्मी... लेकिन वेकिन कुछ नहीं। मैं यूं गई और अभी आएँगा। खुदा हाफ़िज़ अम्मी"

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

"अल्लाह हाफिज़ बेटा ; संभलके जाना।"

मेरी दिल क्यों घबरा रही है मुझे कुछ अजीब सा लग रही है पता नही क्या मामला है।

"असलामु अलैकुम अम्मी"

"वअलैकुम सलाम बेटा। क्या है तुम्हारी हाथों में ?"

"कुछ नही अम्मी आप लोगों केलिए मेरी तरफ से एक छोटी सी तोहफ़े"

"इसकी क्या ज़रूरत थी बेटा ?"

"रहने दो अम्मी, ये मेरी खुशी केलिए है। आप लोगों को खुश देखने पर मुझे सुकून मिलती है।"

"मुबारक हो अमल, जीते रहो बेटा। अल्लाह तेरी भला करे"

"शुक्रिया अम्मी। अम्मी क्या घर में कोई और नही है किसी का नज़र भी न मिली।"

"हाँ.. हाँ सब थे मुस्कान बाहर कपडे को लेने केलिए चली गई और सलमान अपनी दोस्तों की साथ चली गई।"

"इतनी रात उसने अकेला चली गई ; अम्मी वे छोटा है उसका ध्यान रखना अम्मी।"

"हाँ बेटा मुझे पता है तुम बैठो मैं खाना लगाती हूँ।"

"जी अम्मी, मुस्कान तुम कहा हो ज़रा इधर आओ ना।"

"जी आपी मैं अभी आती हूँ।"

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി..... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

"ये लो ये तेरे लिए।"

"आपी ये तो बहुत ~~अच्छा~~ अच्छी है। मुझे ~~बहुत~~ बहुत पसंद आया। आपने ये कहा से लाया।"

"मुझे पता था तुझे ये ~~का~~ रंग का सलवार पसंद है इसलिए लाया।"

"थॉक यूँ सो मच आपी!"

"अम्मी के आने में इतनी देर क्यों हो रही है। वे ऐसा कभी लेट नहीं हुआ है न?"

"हा तुम्ने सच बोला ये लडका कहाँ भटकते होगे? मेरी दिल में कुछ अजीब सा लग रहा है।"

[मोबैल रिंग]

"आपी... आपकी फोन ~~का~~ बजा रही है उठो उसे।" मुस्कान ने बोली

"हलो... क्या... ऐसा नहीं हो सकती... कहाँ है वो अब... किस अस्पताल में?"

"आपी क्या हुआ"

"क्या हुआ बेटा? तुम क्यों इतनी परेशान हो?"

"अम्मी छोटे को कोई गाड़ी से टकरा गया। वो अब एक अस्पताल में है। आप चलो मेरी साथ।"

"क्या बेटा। चलो बेटा चलते है।"

"आपी आप ~~सेम~~ फिक्र मत कर उसे कुछ नहीं होगी"।

"हलो, क्या? तुमने ये क्या किया बेवकूफ? एक काम कर तुम घर आओ और मुझे उस अस्पताल की लोकेशन भेज। एक बात याद रखना इसके बारे में कोई भी न्यूस चानल को या दूसरा को पता नहीं जाना। समझा अब आओ इधर।"

"जी भैया।"

"मॉम"

"क्या है बेटा, मेरी शेर क्यों इतनी परेशान दिखती हो? क्या हुआ अली"

"मॉम शान ने हमारे गाड़ी से एक लड़के को मार दिया।"

"क्या? शान को कुछ हुआ?"

"नहीं माँ वो ठीक है लेकिन वे बच्चा ऐ.सी.यु में है। उसका हाल काफी बुरा है। आपको पता है न ~~एक~~ एलक्षनस आ रही है। और अगर इसके बारे में कोई भी सुना तो हमारे लिए और हमारी पार्टी के लिए वे अच्छी नहीं होती।"

"अल्लाह का शुकर है उसे कुछ नहीं हुआ। तु फिक्र मत कर मैं सब संभालूगी। तुम उसे अब घर बुलाओ और हम दोनों अस्पताल जाएँगे, अभी।"

"ठीक मॉम और उससे कहो की मेरे अनुवाद के बिना घर से ~~मत~~ बाहर मत निकाल।"

"ठीक अली शाह अब आओ मेरे साथ।"

തിയ്യതി....................
64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശ്ശൂർ ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★

Item Code: 952 Participant Code: 033

"डाक्टर वे कैसे हो? क्या हम उसे देख सर सकती हो?"

"हा लेकिन खून बहुत नष्ट हुआ इसलिए वे अभी भी होश में नही आया"

"डाक्टर वे अब कहा है?"

"अब ऐ.सी.यु में है। अगर होश में आती तो मैं ज़रूर आप लोगों को अंदर भेजूगी। आप कृपया यहा बैठो और बेफिक्र रहो। उसकी भलाई केलिए दुआ करें।"

"डाक्टर ये किसने किया?" - अमल ने अपनी सारी ताकत को वापस लेकर पूछा

"वो एक आकसिडेन्ट था उन लोगों ने बिल करवालिया और मुझे यहा रेकमेनट किया"

"शुक्रिया डाक्टर"

अमल गुस्से के साथ उदास भी थे फिर भी उसने अपनी अम्मी और बहन को ~~स्वात्~~ सात्वंन करने की कोशिश किया।

"आप लोगों प्लीज़ यहा बैठो मैं अभी आया। मैं चाचो को भी बुलाऊँगी"

"आपी आप कहा जा रही हो?" - मुस्कान ने पीछे से पूछा

"मुस्कान तुम अम्मी को संभालो मैं ~~अभी~~ अभी आती हूँ।"

"मुस्कान अमल ने कहा गई?" - चाचा ने नाराज़ होकर पूछा

"चाचा वो आपी ने गाड़ी चलाने वाले लोगों से मिलने केलिए गया।"

"रुको" - अमला ने अली शाद और उसकी माँ के आगे खड़े होकर कहा।

"आपने क्या सोचा कि बच्चे को मारकर उसकी अस्पताल की खर्च ठीक करने पर सब ठीक हो जाती?"

"तुम्हें क्या चाहिए? क्या तुम्हें कुछ और पैसों कि ज़रूरत है?"

"मेरी छोटी बहन अपनी जान के लिए लड़ते रही है और आप लोगों ने उसकी जान के लिए पैसा देने का बात करते हो? अजीब सी बात है जब अमीर लोग गरीब लोगों को कुछ कहती हो तब उनकी ओर इशारा करने के लिए कोई नहीं होती, क्योंकि आपकी पास पैसे है।"

"अरे बकवास बंद कर और हमारे रास्ते से पीछे हठ।" - अली शाद ने गुस्से से आग की तरह जल रही थे और अमला भी

"नहीं तो वरना तू क्या करेंगे?"

"आखिर तुम है कौन?"

"मैं उसकी बड़ी बहन हूँ। और मेरे जीते जी मैं तुम लोगों को छोड़ूँगा नहीं, मैं तुम सब को सज़ा दिला दूँगी"

"अमला!- वो तो चली गई" - चाचा ने बोला

अमला को ऐसा लगा की उनकी सारी देह हे कमज़ोर

हो रही है और वो अपने आप को सम्भल न सका। उसकी आँखो से आँसु की वर्षा हो रही थी।

"देखो तुम्हारी वजह से मुझे मेरी भाई भी नष्ट हुआ। मैं तुम सबको सुकून में रहने नहीं दूँगी ये मेरी वादा है"।

"अली शाह के हाथ अमल को मारने केलिए उठ रहे थे तब उसकी माँ ने कहा और उसे अपने साथ लेकर बाहर चली गई।

सलमान को इस हालत में देखना अमल केलिए असभंव था लेकिन उसकी अपने बाबा से किया वादा निभाने केलिए वे अम्मी और मुस्कान केलिए ताकत बढ़ाकर जीने केलिए प्रयास किया।

"पुलीस साहब आपको पता है मैं यहा एक कमप्लैंट दे थी। लेकिन आपने उसके बदले कोई महज़ कदम नहीं उठाया तो मुझे यारी एक महीने उसको पीछा करके सारी सबूतर यहा ले चुकी हूँ। अगर आप अब भी कुछ न कुछ नहीं किया तो बुराई सिर्फ उन लोगों केलिए भी नहीं आपको भी झेल पाना पड़ता है। मैं ये सारी सबूतर कोर्ट में भी भेजा हूँ और मैं ये साबित किया की ये सब उन लोगों की- उन अमीर लोगों की गलती है। अब तो आपको उनके आगे कानूनी कदम उठाना ही पड़ेगा"।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശ്ശൂർ ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★ തിയ്യതി....................

अमल की बात सुनकर पुलीस को शौक सा लगा और वे कुछ देर खामोश होकर फीर पूछा
"लेकिन ये कैसे हो सकता है?"
"सिर्फ एक बात, इस सफर में हारना मेरे लिए मंज़ूर नहीं था। ये मेरे मेहनत है और मेरे बाबा से हुआ वादा"
पुलीस के साथ अमल भी शान को अरस्ट करने केलिए उसकी घर चली। तब पुलीस ने शान को ले गया तब अमल ने शान और उसकी माँ से बोली'
"देखा मैं उसकी बड़ी बहन हूँ।" ‖